Page-1

* यौन शिक्षा — आवश्यकता एवं महत्व

⇒ यौन इच्छाओं एवं इसके प्रति जिज्ञासा होना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। मनुष्य की मूल प्रवृत्तियों में से एक "काम" भी है, परंतु बालक और बालिकाओं को रूढ़िवादी समाज में यौन नहीं प्रदान की जाती है। इसका परिणाम यह होता है कि इसे सामाजिक निषेध की वस्तु मानकर चोरी-छिपे इसके विषय में अवास्तविक तथा भ्रांतिपूर्ण अपूर्ण जानकारी एकत्र हो जाता है जिससे आगे चलकर उनके शारीरिक, मानसिक तथा नैतिक विकास पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। A/c to Dr. Lawrence K. Frank बालक और बालिकाओं की तीन स्थितियों में वर्णन किया गया है—

→ मत करो (The don't stage)
→ करो (The do's stage)
→ क्यों इसलिए (Why because stage)

पहला stage में बच्चा क्रियाशील होता है तो उसे टोका, रोकी जैसी बातें सुनने को मिलती है। यहीं से यह सामाजिक बंधन से बंधने लगता है और यौनांगों के स्तर को भी सीखता है। इस प्रकार ये External prohibitions उसके व्यवहार के Inhabitions का रूप धारण कर लेता है।

दूसरे stage में मत करो के साथ-साथ करो की स्थिति भी चलती रहती है। करो की स्थिति में स्वीकृत व्यवहार के ढंग जैसे - पहनावा, स्वच्छता

Scanned with CamScanner

Page 2

~~स्वास्थ्य~~ स्वास्थ्य की आदतें, भाषा का प्रयोग व्यवहार एवं प्रतिकों का सीखना सम्मिलित है

तीसरे Stage में बच्चे सामाजिक नियमों, रीति-रिवाजों, धार्मिक विश्वासों, कृत्य विज्ञान आदि की जानकारी प्राप्त करता है या चाहता है जैसे-जैसे वे बड़े होते हैं उनमें जिज्ञासाओं तथा अनेक प्रकार के प्रश्न उभरने लगते हैं जैसे शारीरिक संरचना, बच्चे का जन्म आदि। यह शिक्षा के द्वारा युवाओं में लिंग से जुड़े विषयों की वैज्ञानिकतापूर्ण शिक्षा, शारीरिक संरचना एवं बनावट, शारीरिक संबंध तथा प्रक्रिया आदि के बारे में बताया जाता है। यह शिक्षा बच्चों के लिए इस तरह से मानसिक विकास करते हैं जैसे -

→ स्वस्थ यौगिक दृष्टिकोणों का विकास करना।

→ शारीरिक संरचना एवं बनावट का ज्ञान प्रदान करना।

→ विभिन्न आयु में होने वाले शारीरिक परिवर्तन और प्रक्रिया का ज्ञान प्रदान करना।

→ शारीरिक संबंधों एवं उनसे जुड़ी जानकारी वैज्ञानिक रूप से प्रदान करना।

→ यौन जनित दुर्व्यवहारों की पहचान एवं रोकथाम का ज्ञान देना।

→ बालक और बालिकाओं की भ्रान्तियों का निराकरण करना। इत्यादि

इस प्रकार आज के युग में यौन शिक्षा की आवश्यकता अधिक बढ़ गई है

Page-3 क्योंकि बच्चों के पास इन विषयों पर जानकारी प्राप्त करने के पास इन अनगिनत साधन है, पर वे कपनीय है। इससे उनके मन में भ्रांतियाँ और काल्पनिकता प्रभावी हो जाती है जिसके दुष्परिणाम इस तरह है:—

→ भावात्मक असुरक्षा
→ घर वालों तथा समाज के प्रति उपेक्षा।
→ पढ़ाई में मन ना लगना।
→ निराशा।
→ समाज में गलत काम करना।
→ कुण्ठा
→ अश्लील साहित्य के प्रति रुचि होना।
→ चिड़चिड़ापन।
→ मानसिक विकार।
→ स्त्रियों के प्रति अनादर।
→ अश्लील हरकतें इत्यादि।

जैसा की पता चलता है की यौन शिक्षा अगर प्रदान नहीं की जाएगी युवाओं में परस्पर लिंग के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास नहीं होगा, जिससे विद्यालय, घर और बाहर कहीं भी सुरक्षात्मक वातावरण का सृजन नहीं हो सकेगा। अतः इसे प्रभावी बनाने के लिए निम्नलिखित प्रकार से जागरूकता लाई जा सकती है:—

(1) यौन शिक्षा और यौन से सम्बंधित विषयों के प्रति शर्म नहीं होना चाहिए बल्कि जागरूकता का भाव रखना चाहिए।

Page-4 → यौन रचनाओं तथा क्रियाओं के विकास की प्रक्रिया।

(3) विद्यालय तथा समाज प्रजातांत्रिक मूल्यों में आस्था रखना।

(4) विद्यालयी क्रियाओं में सामूहिकता पर बल।

(5) सह: शिक्षा को प्रोत्साहन।

(6) घर में समानता का व्यवहार होना।

(7) सह: सम्बन्ध का महत्व बताना।

(8) समाज को सुशिक्षित बनाकर।

(9) बालक और बालिकाओं के लिए रचनात्मक यौगिक सुकाम बनना।

(10) निर्देशन एवं परामर्श की सुविधा।

(10) समुचित पाठ्यक्रम द्वारा।

(11) प्रौढ़ शिक्षा के प्रसार द्वारा।

(12) बालिकाओं के विद्यालयीकरण को प्रोत्साहित करके।

(13) अश्लील गीतों, व्यवहारों आदि रोक लगाकर।

Scanned with CamScanner

(14) लैंगिक समानता हेतु बनाए गए कानूनों का पालन करना।

(15) अंधविश्वास तथा रूढ़ियों की समाप्ति करना।

(16) व्यावसायिक शिक्षा द्वारा।

(17) माता पिता द्वारा इन विषयों पर संवाद स्थापित करना।

(18) अन्य अभिकरणों से सहयोग स्थापित करना आदि।

(Note:– यौन शिक्षा पर कोई भी प्रश्न आएगा तो उत्तर यही लिखना है।)

Scanned with CamScanner